बालगोबिन भगत

Q.1: खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

Ans : बालगोबिन भगत गृहस्थ थे, वे साधु तो थे पर वह परंपरागत साधु जैसे नहीं थे, उनके चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार है:-कबीर को मानते थे, उन्हीं के गीत गाते थे।किसी से बिना कारण से बड़ा मॉल नहीं लेते थे।वे दूसरों की चीज को ना तो छूते ना ही व्यवहार में लाते।वे सुख-दुख की भावना से ऊपर थे।

Q.2: भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

Ans : भगत के बेटे की आकस्मिक मृत्यु के बाद भगत ने पुत्रवधू को उसके भाई के साथ भिजवा दिया। वह जाना नहीं चाहती थी क्योंकि भगत जी बूढ़े थे पुत्रवधू को उनकी भोजन की चिंता थी तथा बीमार पड़ने पर उनकी सेवा कौन करेगा? यह सब सोचकर वह भगत जी को अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी।

Q.3: भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

Ans : अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु पर भगत विचलित नहीं हुए। पुत्र को चटाई पर लेटा सफेद कपड़े से ढक दिया; फुल बिखेर दिए और सिरहाने दीपक जला दिया। उसके समीप बैठकर कजडी बजाते हुए गाते रहें।रोती हुई पतोहू को चुप कराते हुए बोले मृत्यु का अवसर रोने का नहीं उत्सव मनाना ही का है क्योंकि तब आत्मा परमात्मा से मिलती है।विरहिनी अपने प्रियतम से मिलती है।

Q.4: भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

Ans : बालगोबिन भगत मंझले कद गोरे चिट्टे आदमी थे। वे साठ साल के ऊपर के व्यक्ति थे।उनके बाल सफेद थे वह बहुत कम कपड़े पहनते थे,उनकी कमर में केवल लंगोटी बंधी रहती थी और सिर पर कबीरपंथी की कनपट्टी टोपी पहने रहते थे। मस्तक पर रामनंदी तिलक लगाए रहते थे और गले में तुलसी की जड़ों की बेडाल माला बांधे रहते थे।

Q.5: बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

Ans : बालगोबिन भगत के अचरज का कारण थी,ना जाने कब अंधेरे में अपनी दिनचर्या शुरू करते थे।वह नदी स्नान कराते और गांव के बाहर चबूतरे पर खजडी बजाकर गाने लगते।अपने खेत जोतते और रोपनी करते।बाकी समय खजडी बजाकर गाने में बिताते। वे इतना काम करते थे यही लोगों में अचरज का कारण था।

MyClass24 Your Class, Your Pace.